श्री दत्ता मेघे (महाराष्ट्र): मैं अपने को इस स्पेशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

डा॰ फागुनी राम (बिहार): मैं अपने को इस स्पेशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

श्री विजय सिंह यादव (बिहार): मैं अपने को इस स्पेशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

प्रो॰ एम॰ एम॰ अग्रवाल (उत्तर प्रदेश): मैं अपने को इस स्पेशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

Concern over increasing price of steel in the country

†श्री अबू आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदय, स्टील की बढ़ती कीमतों ने लाखों लोगों को, जो इस उद्योग से जुड़े हुए हैं और उनके परिवारों को भुखमरी और आत्महत्या के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। पिछले 3 सालों में स्टील की कीमतों में भारी वृद्धि हुई है। वर्ष 2004-05 के बजट में इन लोगों को यह आशा थी कि सेकेन्ड्री स्टील की कस्टम डयूटी में कटौती की जाएगी, जिससे छोटे कारखाने, जो सेकेन्ड्री स्टील से रोजमर्रा की वस्तुएं साईकिल और खेती-बाड़ी की चीजें बनाते हैं, उन्हें राहत मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कस्टम डयूटी को 20 प्रतिशत की रहने दिया गया और सेन्ट्रल-एक्साईज़ डयूटी 4 प्रतिशत से बढ़ाकर 16 प्रतिशत, और फिर 20 प्रतिशत कर दी गई, जब कि प्राईम स्टील पर डयूटी 5 प्रतिशत ही है, जिसका लाभ बड़े कारखानों को मिलता है। सरकार ने प्राईम स्टील पर डयूटी 40 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत इसलिए की थी कि स्टील की कीमत स्थिर रहे और घरेलू कारखानों को लोहा-इस्पात वाजिब दामों पर मिले, लेकिन यह बड़े स्टील प्लांट अपने उत्पादन का 90 प्रतिशत एक्सपोर्ट कर देते हैं और घरेलू कारखानों को बचा-खुचा माल ही मिलता है, जिसके कारण छोटे उद्योगों के पास माल की कमी हो जाती है और उत्पादन नहीं हो पाता है। इसके कारण महंगाई और बेरोज़गारी के साथ-साथ अपराध भी बढ़ रहे हैं। मेरी सरकार से मांग है कि वह बड़े स्टील उद्योगों के साथ-साथ, छोटे और घरेलू उद्योगों को भी वाजिब दाम में स्टील मुहैया कराये और सेकेन्ड्री-स्टील की कस्टम डयूटी को 20 प्रतिशत से घटाकर प्राईम-स्टील की कस्टम डयूटी के बराबर किया जाए। स्टील की कीमतों को रोज समाचारपत्रों में प्रकाशित किया जाना चाहिए, जिससे स्टील की कालाबाजारी को रोका जा सके। इससे बड़े लोगों के साथ, गरीब भी खुश रहेंगे।

شری ابو عاصم اعظمی ''اتر پردیش'' : آپ سبھاپتی مہودے، اسٹیل کی بڑھتی قیمتوں نے لاکھوں لوگوں کو، جو اس ادھیوگ سے جڑے ہوئے ہیں، اور ان کے پریواروں کو بھوکمری اور خودکشی کے کگار پر لاکر کھڑا کر دیا ہے۔ پچھلے ۳ سالوں میں اسٹیل کی قیمتوں میں بھاری بڑھوتری ہوئی ہے۔ سال ۰۵-۲۰۰۴ کے بجٹ میں ان لوگوں کو یہ آشا تھی کہ سیکنڈری اسٹیل کی کسٹم ڈیوٹی میں کٹوتی کی جائے گی، جس سے چھوٹے کارخانے جو

†Transliteration of Urdu Script.

سیکنڈری اسٹیل سے روزمرہ کی چیزوں، سائیکل اور کھیتی باڑی کی چیزیں بناتے ہیں انہیں راحت ملے گی، لیکن ایسا نہیں ہوا۔ کسٹم ڈیوٹی کو ۲۰ فیصد ہی رہنے دیا گیا اور سینٹرل ایکسائز ڈیوٹی ۴ فیصد سے بڑھا کر ۱۶ فیصد، اور پھر ۲۰ فیصد کر دی گئی، جبکہ پرائم اسٹیل پر ڈیوٹی ۵ فیصد ہی ہے، جس کا فائدہ بڑے کارخانوں کو ملتا ہے۔ سرکار نے پرائم اسٹیل پر ڈیوٹی ۴۰ فیصد سے گھٹا کر ۵ فیصد اس لئے کی تھی کہ اسٹیل کی قیمت استھر رہے اور گھریلو کارخانوں کو اپنا اپنا واجب دام ملے، لیکن یہ بڑے اسٹیل پلانٹ اپنے اُتپادن کا ۹۰ فیصد ایکسپورٹ کر دیتے ہیں، اور گھریلو کارخانوں کو بچا کھچا مال ہی ملتا ہے، جسکی وجہ سے چھوٹے اُدھیوگوں کے پاس مال کی کمی ہو جاتی ہے اور اُتپادن نہیں ہو پاتا ہے۔ اس کی وجہ سے مہنگائی اور بے روزگاری کے ساتھ ساتھ اپرادھ بھی بڑھ رہے ہیں۔ میری سرکار سے مانگ ہے کہ وہ بڑے اسٹیل ادھیوگوں کے ساتھ ساتھ، چھوٹے اور گھریلو اُدھیوگوں کو بھی واجب دام میں اسٹیل مہیا کرائے اور سیکنڈری اسٹیل کی کسٹم ڈیوٹی کو ۲۰ فیصد سے گھٹا کر پرائم اسٹیل کی کسٹم ڈیوٹی کے برابر کیا جائے۔ اسٹیل کی قیمتوں کو روز سماچار پتروں میں پرکاشت کیا جانا چاہئے، جس سے اسٹیل کی کالا بازاری کو روکا جا سکے۔ اس سے بڑے لوگوں کے ساتھ، غریب بھی خوش رہیں گے۔

''ختم شد''

श्री विजय सिंह यादव (बिहार) : मैं अपने आप को इस स्पैशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

श्री कमाल अख्तर (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने को इस स्पैशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश) : मैं अपने को इस स्पैशल मैंशन के साथ एसोसिएट करता हूं।

Concern over the miserable conditions of the weavers in the Country

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, देश के बुनकरों की दशा आज सरकार की उपेक्षा के कारण काफी दयनीय हो गई है। कई क्षेत्रों में बुनकरों ने अपनी दयनीय हालत के कारण आत्महत्या करनी शुरू कर दी है, क्योंकि बुनकर व्यवसाय से वे अपना परिवार का लालन-पालन करने में असमर्थ हैं। उन्हें कच्चा माल उचित मूल्य पर नहीं मिल पा रहा है। चीन से सिल्क के कपड़े और सिल्क का कच्चा माल, तस्कारी के द्वारा भारतीय बाज़ार में बिक रहा है। इन बुनकरों को सरकार की ओर से ईमानदारी से राज्य सहायता एवं अन्य सहायता भी नहीं मिल पा रही है। सरकार ने बुनकरों के लिए हालांकि कई योजनाएं शुरू की हैं, परन्तु ये योजनाएं केवल सरकारी कागजों में पूरी हो रही हैं, बुनकरों को इससे कोई विशेष फायदा नहीं हो रहा है। एक जमाने में इन बुनकरों के माध्यम से उत्पादित कपड़ा पूरे विश्व में प्रसिद्ध था और एक अंगूठी में से कई मीटर कपड़ा पार हो जाता था। दुनिया में इनके द्वारा उत्पादित कपड़े की काफी मांग है, फिर भी सरकार बुनकरों की दशा सुधारने के लिए ठीक ढंग